

---

# Shri Hanumat Tandava Stotram

---

## श्रीहनुमत्ताण्डवस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : hanumattANDava stotram

File name : hanumattANDavastotram.itx

Category : hanumaana, stotra

Location : doc\_hanumaana

Author : Traditional

Latest update : July 27, 2012

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 14, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीहनुमत्ताण्डवस्तोत्रम्



वन्दे सिन्दूरवर्णाभं लोहिताम्बरभूषितम् ।  
रक्ताङ्गरागशोभाढ्यं शोणापुच्छं कपीश्वरम् ॥

भजे समीरनन्दनं, सुभक्तचित्तरञ्जनं,  
दिनेशरूपभक्षकं, समस्तभक्तरक्षकम् ।  
सुकण्ठकार्यसाधकं, विपक्षपक्षबाधकं,  
समुद्रपारगामिनं, नमामि सिद्धकामिनम् ॥ १ ॥

सुशङ्कितं सुकण्ठभुक्तवान् हि यो हितं वच-  
स्त्वमाशु धैर्य्यमाश्रयात्र वो भयं कदापि न ।  
इति प्लवङ्गनाथभाषितं निशम्य वान-  
राऽधिनाथ आप शं तदा, स रामदूत आश्रयः ॥ २ ॥

सुदीर्घबाहुलोचनेन, पुच्छगुच्छशोभिना,  
भुजद्वयेन सोदरीं निजांसयुग्ममास्थितौ ।  
कृतौ हि कोसलाधिपौ, कपीशराजसन्निधौ,  
विदहजेशलक्ष्मणौ, स मे शिवं करोत्व्वरम् ॥ ३ ॥

सुशब्दशास्त्रपारगं, विलोक्य रामचन्द्रमाः,  
कपीश नाथसेवकं, समस्तनीतिमार्गगम् ।  
प्रशस्य लक्ष्मणं प्रति, प्रलम्बबाहुभूषितः  
कपीन्द्रसख्यमाकरोत्, स्वकार्यसाधकः प्रभुः ॥ ४ ॥

प्रचण्डवेगधारिणं, नगेन्द्रगर्वहारिणं,  
फणीशमातृगर्वहृद्दृशास्यवासनाशकृत् ।  
विभीषणेन सख्यकृद्धिदेह जातितापहृत्,  
सुकण्ठकार्यसाधकं, नमामि यातुघतकम् ॥ ५ ॥

नमामि पुष्पमौलिनं, सुवर्णवर्णधारिणं

गदायुधेन भूषितं, किरीटकण्डलान्वितम् ।  
सुपुच्छगुच्छतुच्छलंकदाहकं सुनायकं  
विपक्षपक्षराक्षसेन्द्र-सर्ववंशनाशकम् ॥ ६ ॥

रघूत्तमस्य सेवकं नमामि लक्ष्मणप्रियं  
दिनेशवंशभूषणस्य मुद्गीकाप्रदर्शकम् ।  
विदेहजातिशोकतापहारिणम् प्रहारिणम्  
सुसूक्ष्मरूपधारिणं नमामि दीर्घरूपिणम् ॥ ७ ॥

नभस्वदात्मजेन भास्वता त्वया कृता  
महासहा यता यया द्वयोर्हितं ह्यभूत्स्वकृत्यतः ।  
सुकण्ठ आप तारकां रघूत्तमो विदेहजां  
निपात्य वालिनं प्रभुस्ततो दशाननं खलम् ॥ ८ ॥

इमं स्तवं कुजेऽहि यः पठेत्सुचेतसा नरः  
कपीशनाथसेवको भुनक्तिसर्वसम्पदः ।  
प्लवङ्गराजसत्कृपाकताक्षभाजनस्सदा  
न शत्रुतो भयं भवेत्कदापि तस्य नुस्त्वह ॥ ९ ॥

नेत्राङ्गनन्दधरणीवत्सरेऽनङ्गवासरे ।  
लोकेश्वराख्यभट्टेन हनुमत्ताण्डवं कृतम् ॥ १० ॥

इति श्रीहनुमत्ताण्डवस्तोत्रम् ॥

Encoded and proofread by Madhavi U

---

—  
*Shri Hanumat Tandava Stotram*

pdf was typeset on February 14, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

